International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.109-112

शास्त्रीय संगीत शिक्षण व संचार माध्यम

डॉ. सीमा सक्सैना*

प्रस्तावना

संगीत में परिवर्तन व परिवर्धन होते ही रहते हैं और सदा होते ही रहेंगे। ललित कलाओं के क्षेत्र में सदा ही कुछ नया प्रचार प्रसार में लाया गया है और क्षण–क्षण परिवर्तित होने वाला ललित कला का अप्रतिम रूप रमणीय हो जाता है। वर्तमान परिदृश्य में संगीत के शिक्षण पर विचार करने से पूर्व प्रागैतिहासिक युग में शिक्षण परम्परा पर एक अवलोकन अवश्य करना होगा। संगीत शिक्षण परम्परा का प्राचीनतम रूप वैदिक काल में था,जहाँ गुरुकुल संगीत परम्परा थी वहां संगीत मनीषि वेदों के साथ कलाओं में भी अपने अपने गुरुकूलों में शिष्यों की निष्णात् करते थे, जहाँ गुरु अर्थोपार्जन के लिए नहीं वरन् समाज में शिक्षा के उपयोग में अपने ज्ञान का संचार शिष्यों में करता था। इसी गुरुकुल परम्परा का परिलक्षित, परिष्कृत रूप घराना के रूप में दृष्टिगत हुआ।

उस काल में संगीत शिक्षण में सीना–ब–सीना तालीम ही माध्यम थी और घरानों के वटवृक्ष तले संगीत का शैक्षणिक स्वरूप पल्लवित होता रहा। मध्य युग में स्वामी हरिदास जैसे महान गुरु रहे जिन्होंने तानसेन जैसे योग्य शिष्य तैयार किए, जिनकी प्रशंसा दुंदुभी चहुँ दिशाओं में गूंजती रही है तथा गूंजती रहेगी। मध्य युग के इसी स्वर्णिम काल में घराना सुरक्षित होता रहा और विविध घरानों के माध्यम से संगीत शिक्षण को गति प्रदान होती रही। घराने दार शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य परम्परा का मूल उद्देश्य विशिष्ट घराने की परम्परा में शिष्यों को तैयार करना तथा परम्परा व गायन शैली को संचालित कर आगे बढ़ाना था,किन्तु इसमें घराने की शुद्धता को बनाए रखना नियम सर्वोपरि था।

घराने दार गायकी प्रशिक्षण हेतु प्रतिभाशाली व सुरीले मेहनती शिष्यों का चयन करना होता था।

किन्तु घरानों के कठोर अनुशासन व नियमबद्धता ने इस परम्परा का ह्वास किया। शिष्यों में गायन शैली की विशेषताओं के साथ गुरुओं के अवगुण भी आने लगे। वैदिक परम्परा से उद्धृत संगीत में भी नई विधाओं, नए वाद्यों का आविष्कार हुआ। साथ ही संगीत शिक्षण परम्परा में गुरुकुल परम्परा का चलन छोटी–छोटी रियासतों में भी जारी रहा। मुगलकाल में संगीत को मनोरंजन व भोग विलास का साधन समझे जाने लगा और संगीत एक ऐसे समुदाय के पास पहुँच गया,जहाँ से आमजन के लिए सुलभ हो पाना दुर्लभ था।

उपयुक्त स्थिति निःसंदेह संगीत शिक्षा के लिए एक गतिरोध बनकर रह गई,किन्तु ब्रिटिश काल में इस स्थिति में कुछ परिवर्तन आने लगे। ब्रिटिशों के हिन्दुस्तान में प्रवेश होने के फलस्वरूप पाश्चात्य संस्कृति तथा समाज में मुक्त विचार, सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं का समन्वय हुआ तथा सामाजिक व्यवस्था में नवीनतम परिवर्तन दृष्टिगत होने लगे। ऐसी परिस्थितियों में संगीत शिक्षा के आकार में दो देदीप्यमान नक्षत्रों का उदय हुआ पण्डित विष्णु दत्त पलुस्कर तथा पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे। संगीत को एक कला के साथ शास्त्र, शुद्ध व तार्किक अध्ययन के रूप में इन्हीं दो महामनाओ ने प्रतिपादित किया।

* सह–आचार्य, संगीत (कंठ), राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान।

पश्चिमी शिक्षा पद्धति पर संधारित विद्यालय शिक्षा को उनकी प्रणाली से समन्वितकर दोनों महापुरुषों ने निश्चित समयबद्ध पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा देने वाली परीक्षा मानकों व परिणाम की द्योतक प्रणाली की शिक्षण संस्थाओं में स्थापना की।

इस प्रकार संगीत शिक्षा को संचरित करने वाली ये विद्यालयी संस्थाऐं एक नया प्रारम्भ बनी। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विष्णु दत्त के द्वारा यह महान कार्य नींव की ईंट प्रमाणित हुई।

मुगल काल के दरबारों व गणिकाओं के प्रश्रय में रहे संगीत को जन सुलभ करने के लिए शिक्षण क्षेत्र में लाना वास्तव में एक दुष्कर कार्य था, जिसे इन दो महामनाओं ने कर दिखाया।

संगीत को कला के शिक्षण के रूप में परिवर्तन तथा मात्र आजीविका व अर्थोपार्जन से युक्त साधन न मानकर शिक्षा का रूप माना जाने लगा।

कला और शास्त्र की जो खाई उत्पन्न हो गई थी, उसे अपने पुरातन रूप में शास्त्र व शिक्षण के रूप में समाज में स्थापन कर संगीत को विद्यालयी शिक्षा के आकार में निश्चित किया गया।

विद्यालय पद्धति संगीत शिक्षण की एक सामाजिक आवश्यकता थी। इसके पूर्व समय तक संगीत शिक्षा की दुर्व्यवस्था को दूर कर आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव डाली गई तथा उसे पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त कराने के प्रयत्न किए गए।

विद्यालय पद्धति के उद्देश्यों में संगीत का प्रचार प्रसार कर तथा समाज में एक बड़े पैमाने पर संगीत के जानकारों को तैयार करना प्रमुख था। साथ ही अच्छे कलाकार व गायकवाद को भी तैयार करने का उद्देश्य था। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस पद्धति में संगीत साधकों को रसिक श्रोता, अध्येता, अध्यापक, कलाकार इत्यादि विविध लक्ष्यों से विकसित करने की ओर इंगित किया गया और उसके लिए अनुकूल पाठ्यक्रम अध्यापन पद्धति सभा गायन, सम्मेलन आयोजन के द्वारा संगीत के सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया।

पाठ्यक्रमानुसार लिखी जाने वाली पुस्तकें, संस्थाऐं, संगीत कार्यक्रम संगीत सीखने का प्रमुख केन्द्र बने।

राजदरबारोंके संकुचित दायरे से बाहर आकर संगीत समाज में अभिमुख होने लगा। महाराष्ट्र में संगीत नाटकों का उद्‌भव व विकास होने से संगीत शिक्षण को गति मिली।

वैज्ञानिक उपकरण व चित्रपट संगीत के माध्यम से संगीत को समाज में पूर्णतः व्याप्त किया। रेडियो, ग्रामोफोन, आकाशवाणी तथा अन्य प्रसार माध्यमों के माध्यम से समाज में संगीत प्रसारित होने लगा तथा जन समुदाय में अपने इस पुरातन परम्परा को जानने व ग्रहण करने की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी। इस जिज्ञासा के कारण संगीत शिक्षण परम्परा को त्वरित गति मिली।

पूरे देश में रेडियो सम्मेलनों, संगीत आयोजनों व संस्थाओं ने शास्त्रीय संगीत को पल्लवित व प्रसारित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया तथा संस्थागत शिक्षा पद्धति में भी संगीत को माध्यमिक विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में विषय के रूप में प्रतिपादित किया गया। इस प्रकार शैक्षणिक पटल पर संगीत कला व शास्त्र के मौलिक, तार्किक, वैज्ञानिक व सौंदर्यात्मक अध्ययन के लिए प्रशस्त हुआ।

विष्णु दत्त पुरस्कार व पंडित भातखण्डे द्वारा सम्पूर्ण देश में भ्रमण कर संगीत की बंदिशों व पाठ्य सामग्री का शोधन व संकलन कर दुष्कर व महान कार्य किया गया, जिन्हें कई पाठ्य पुस्तकों में संकलित कर मुद्रण किया गया।

इन्हीं 2 विद्वानों ने संगीत विद्यालय व विश्वविद्यालयों की स्थापना की तथा महिलाओं के लिए भी संगीत की पृथक व्यवस्था की। दुनिया में अन्यान्य संस्कृतियों में नृत्य शास्त्र, वादन के साथ–साथ जो गायन किया जाता है उन्हें पृथक रूप में काव्य को प्रमुख कर पुस्तकों में मुद्रित व लिपिबद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। लिपि व छपाई के बल पर साहित्यान्तर्गत कलाऐं बुलंदी पर आ गईं।

17 से 19 वीं शताब्दी तक के संगीतकारों की श्रेष्ठ कलाकृतियाँ इस तरीके से मुद्रित व स्वर लेखन के माध्यम से विभिन्न शहरों में प्रसूत हो चुकी थीं।

इस संदर्भ में आने वाला महत्वपूर्ण 'मोड़' 1877 में ध्वनि मुद्रण तन्त्र का आविष्कार है। ध्वनि मुद्रण का आविष्कार भारत जैसे मौखिक संगीत की परम्परा रखने वाले देश की संस्कृति के महत्वपूर्ण घटना थी। इस आविष्कार ने मनुष्य की कालदिव्यक संकल्पना पर और काल व 'मिति' सम्बन्धी आकलन पर अत्यधिक प्रभाव डाला है। ध्वनि मुद्रण के आविष्कार ने एक ऐसा असम्भव कार्य किया कि घटित कार्यक्रमों को क्रम में रखकर विगत काल की प्रतीति को पुनः पुनः अनुभव किया जा सका।

ध्वनि मुद्रण के पश्चात किए गए प्रयास और क्रांतिकारी अन्वेषण होते गए और आज प्रसार माध्यमों ने पूरे मानव जीवन को व्याप लिया है। रिकॉर्डस् के पश्चात चित्रपट संगीत में इस प्रयास को नई दिशा दी। चित्रपट संगीत के माध्यम से भी शास्त्रीय संगीत परम्परा का निर्वहन किया गया। फिल्मों के माध्यम से महान गायकों ने अपनी कला को प्रसारित किया, जिससे संगीत विद्यार्थियों को ज्ञान व प्रेरणा की प्राप्ति हुई। सुर संगीत गायक, वादकों के द्वारा थियेटरों में भरसक ध्वनि वर्धन अर्थात्ऐम्पिलिफिकेशन की सुविधा भी संगीत प्रचार–प्रसार के माध्यम का बड़ा माध्यम बनी।माइक्रोफोन व एम्पलीफायर्सने प्रचार–प्रसार को एक नया आयाम दिया। संगीत सम्मेलनों में इस सुविधा से बड़ी क्रांति परिवर्धित हुई।

इसके तुरन्त बाद 'रेडियो' के आविष्कार इस क्षेत्र में एक बड़ा चमत्कारी परिवर्तन किया। रेडियो से शास्त्रीय संगीत सभाओं के माध्यम से संगीत साधक अपनी कला का प्रसार करते थे तथा विद्यार्थी व जनसाधारण उनसे प्रेरित होकर अपनी शिक्षा को पूर्णता देते थे। चित्रपट, दूरचित्रवाणी, वायर रिकॉर्डिंग, टेप रिकॉर्डिंग के पायदान पार करते करते हम वीडियो कैसेट तक पहुँचे। दृश्य व श्रव्य प्रसारण में यह जो बड़ा परिवर्तनहुआ, उसने हमारी संगीत शिक्षण परम्परा में एक बड़ी क्रांति उत्पन्न की।

समाज में दूरदर्शन के आवागमन से भी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार को नई दिशा दी। संगीत कार्यक्रमों के अतिरिक्त धारावाहिकों के सुमधुर संगीत व विज्ञापनों के सुमधुर संगीत से संगीत को अत्यन्त बढ़ावा मिला। तत्पश्चात कम्प्यूटर यंत्र से संगीत की शिक्षण परम्परा को जो प्रसार मिला वह अकथनीय है।कम्प्यूटर में तार्किकशक्ति व मेमोरी का भण्डार होता है। आज के आधुनिक कम्प्यूटरों में दिए गए निर्देशों को प्रोसेस कर मैमोरी बनाए रखने की सुविधा होती है।

कम्प्यूटर एक डायरी के समान होता है, जिसमें रक्षित कर सूचनाओं या आंकड़ों को जब चाहे दोबारा प्राप्त किया जा सकता है। कम्प्यूटर में दो प्रकार के ध्वनि निर्मित होती है। पहली आवाज जो स्वयं कम्प्यूटर सिस्टम की है तथा दूसरी आवाज कम्प्यूटर में लगाए गए साउण्ड कार्ड की, जो मदरबोर्ड में लगाया जाता है।

कम्प्यूटर में विविध सॉफ्टवेयर्स के माध्यम से जो आधुनिकतम ध्वनि मुद्रण किया जाता है उसे संगीत प्रचार प्रसार को सबसे ऊँचा स्थान दिलाया।दूरस्थ क्षेत्रों में भी किसी भी कलाकार के किसी भी समय सुनने व सीखने का जोअवसर इस प्रणाली ने दिया वह अद्वितीय है। कम्प्यूटर व इन्टरनेट जैसी सुविधाओं ने संगीत शिक्षार्थियों को किसी भी कलाकार को सुनने अथवा सीखने के जो अवसर प्रदान किए उनकी कल्पना भी प्राचीन युग में नहीं की जा सकती थी।

कम्प्यूटरव इन्टरनेट क्रांति के साथ स्मार्टफोन की उपादेयता को विस्मृत नहीं किया जा सकता। आधुनिक युग में मोबाइल अथवा स्मार्टफोन हर व्यक्ति को सुलभ है, जिसमें यूट्यूब अथवा अन्य रूप की सहायता से किसी भी गायक अथवा वादक को सुगमता से जब चाहे सुना जा सकता है।पूर्व में अथवा कुछ दशक पूर्व हमारे लिए यह अकल्पनीय था कि हम संगीत कार्यक्रमों का ऐसा सीधा प्रसारण देख व सुन सकें।किन्तु वर्तमान काल में विद्यार्थी अपनी संगीत शिक्षा में किसी भी राग को अपने गुरु के साथ–साथ अपने स्मार्टफोन के माध्यम से विभिन्न कलाकारों को सुनकर उनकी विशिष्टताऐं समझ व सीख सकता है।

इस तरह इन सभी आधुनिक उपकरणों व सुविधाओं ने शास्त्रीय संगीत में संगीत शिक्षण को नए उपादान उपलब्ध कराए हैं। रेडियो, दूरदर्शन, ग्रामोफोन, रिकॉर्ड ध्वन्यांकित संगीत, स्टीरियो रिकॉर्डस्,टेप रिकॉर्डस् वीडियो रिकॉर्डिंग,चिप्स, मेमोरी चिप्स, सीडी और पेनड्राइव, इन्टरनेट,कम्प्यूटरीकृत डिजिटल रिकॉर्डिंग, ट्रैक रिकॉर्डिंग आदि ऐसे माध्यम हैं जिन्होंने आधुनिक युग में संगीत को नवीन कलेवर में आलेखित किया है।

संचार माध्यमों से युक्त नवीन भौतिक उपकरण शास्त्रीय संगीत को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। अभी विगत वर्ष कोरोना जैसीमहामारी की विषम परिस्थितियों में सभी शिक्षण संस्थाओं तथा कलाकारों ने इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थियों को ई–कन्टेन्ट दिए, जिससे घर बैठे विद्यार्थियों ने लाभान्वित होकर अपना पाठ्यक्रम पूर्ण किया।

प्रौद्योगिक उपकरणों के अतिरिक्त पत्रकारिता भी महत्वपूर्ण उपादान है, जिससे संगीत शिक्षण अछूता नहीं है।विविध राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कलाकारों व वाद्यों के परिचय संगीतिक योगदान व नए–नए विषयों पर प्रकाशित सामग्री से हमारा संगीत छात्र अछूता नहीं है। वह अपना ज्ञान हर पहलू से वर्धन करना चाहता है।

अभी उन्नति का पथ अग्रेषित है,नित नवीन आविष्कार, शोध, लघु शोध, सर्वेक्षण अर्न्तराष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन उनसे प्राप्त निष्कर्ष व शोध संचार माध्यमों के माध्यम से संगीत शिक्षार्थी को लाभान्वित करते रहेंगे और हमारा शास्त्रीय संगीत इनके माध्यम से नई दिशाएं प्राप्त कर नए–नए पायदान पर अग्रेषित होता ही रहेगा ऐसा हमारा विश्वास है।

❖◆❖